

त्याग का आशय

त्याग की भावना अत्यंत पवित्र है। त्याग करने वाले पुरुषों ने ही संसार को प्रकाशमान किया है। जिसने भी जीवन में त्यागने की भावना को अंगीकार किया, उसने ही उच्च से उच्च मानदंड स्थापित किए हैं। सच्चा सुख व शांति त्यागने में है, न कि किसी तरह कुछ हासिल करने में। गीता में भगवान् कहते हैं कि त्याग से तत्काल शांति की प्राप्ति होती है और जहां शांति होती है, वहीं सच्चा सुख होता है। मनुष्य अपने जीवन में सारा श्रम भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति में ही लगा देता है। वह अपने सीमित जीवन में सभी कुछ पा लेना चाहता है। इसी में सारा जीवन खप जाता है। वह जितना भौतिक लाभ प्राप्त करता जाता है, उसकी सांसारिक तृष्णा उतनी ही बलवती होती जाती है। उसे शांति से बैठने नहीं देती। उसकी बेचैनी को बढ़ाती रहती है। मनुष्य जीवन की कुछ मूलभूत आवश्यकताएं होती हैं, उनकी पूर्ति तो आवश्यक है। उनके बिना तो जीवन की निरंतरता को बनाए रखना असंभव है। इस निरंतरता को बनाए रखने के लिए प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति तो ईश्वर करता ही रहता है। उन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने के पश्चात् फिर मनुष्य को क्या चाहिए ? बस यहां पर रुककर विचारने की आवश्यकता होती है कि अब हमें किस मार्ग की ओर बढ़ना है।

ईश्वर की अनुभूति करने और समाज में उच्च मानदंड स्थापित करने के लिए त्याग की भावना को अंगीकार कर, उस पथ पर बढ़ने की आवश्यकता होती है। उस मार्ग में व्यक्तिगत व शारीरिक सुखों का त्याग करना होगा। उन सभी

आसक्तिओं को छोड़ना होगा, जो मानव जीवन को संकीर्णता की ओर ले जाने वाली होती है। तब यही त्याग वृत्ति अंतःकरण को पवित्र कर भीतर के तेज को देदीप्यमान करती है। भारत में त्याग की परंपरा पुरातनकाल से चली आ रही है। आसक्ति से विरत हो जाने वालों की यहां पूजा की जाती है। भगवान राम द्वारा अयोध्या के राज्य को एक क्षण में त्याग देने जैसे स्थापित किए गए आदर्श को संसार पूजता है। राज्य का त्याग कर वन में जाने से उन्होंने समाज में उच्चतम मानदंड स्थापित किया। साथ ही लोगों को धर्म, अध्यात्म, ज्ञान व भक्ति के मार्ग की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा भी प्रदान की। त्याग से मनुष्य ईश्वर को प्राप्त कर सच्चे सुख व शांति का लाभ पाता है, वहीं समाज को भी उच्च आदर्शों के मानदंड बरकरार रखने की प्रेरणा प्रदान करता है।

त्याग एवं वर्तमान समाज-

त्याग और बलिदान ऐसे गुण हैं जिनके आधार पर ही किसी व्यक्ति को महानता और स्थायी मान्यता प्राप्त हो सकती है। हमारा यश तभी टिकाऊ हो सकता है जब हम समाज के कल्याण को प्राथमिकता देकर कुछ त्याग और बलिदान करेंगे। जिन लोगों ने धन - वैभव के बल पर कीर्ति और मान्यता प्राप्त करनी चाही उनकी नामवरी उनके जीवन काल तक ही सीमित रही। जब तक वे अपना ठाठ - बाट दिखाते रहे और खुशामद करने वालों को रुपया - पैसा देते रहे तभी तक बहुत से लोग 'धर्म - मूर्त' और 'अन्नदाता' कहकर उनको ऊँचा चढ़ाते रहे, पर जैसे ही उनका निधन हुआ या किसी कारणवश उनकी सम्पत्ति का अंत हो गया तो लोग भी आँखें फेर लेते हैं।

वर्तमान युग में महात्मा गाँधी ने देश की आजादी के लिये सब प्रकार के कष्टों को सहा, प्राणों का भय बिल्कुल त्याग दिया और ब्रिटिश साम्राज्य की तोपों के सामने सीना खोल कर खड़े हो गए तो जनता पर उनका ऐसा जादू चला कि सारा देश एक साथ उनका अनुयायी बन गया। जिन लोगों से किसी प्रकार के त्याग की आशा न थी वे भी अपना घर - बार और स्वार्थ त्याग कर हँसते हुए जेल चले गये। सामान्य लोगों ने अंग्रेजी रायफलों की गोलियां खाकर प्राण देने

में जरा भी भय नहीं किया। यह एक असाधारण दृश्य था जिसकी कल्पना पर कोई विश्वास नहीं करता था।

उसी युग में क्रान्तिदल के वीरों ने अपूर्व साहस और आत्म - त्याग का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया, परन्तु तत्कालीन परिस्थितियों के कारण उसका प्रभाव सामान्य जनता तक पूर्ण रूप से नहीं पहुंचा।

इसी तरह महाराणा प्रताप के महान त्याग और तपस्या का ही परिणाम था कि उनके पास धन - सम्पत्ति का सर्वथा अभाव होने पर भी उन्हें लगातार राजपूत और भील सहायक मिलते रहे, जो उन्हीं की तरह कष्ट सहकर बिना वेतन के सैनिक और कार्यकर्ताओं का कर्तव्य पूरा करते रहे। स्वामी - सेवक अथवा नेता - अनुयायी का इस प्रकार का निःस्वार्थ आत्मत्याग एक ऐसा दृश्य होता है, जो कभी - कभी ही संसार में दिखाई देता है।

बिना त्याग के कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता. यदि आप एक विद्यार्थी है, तो आपको आलस्य और महत्वहीन सुखों का त्याग करना होता है. जिस से आप परीक्षा में अच्छे अंक ला सके। अलग- अलग परिस्थितियों अलग-अलग चीजों का त्याग करना पड़ सकता है. अल्पकाल के लिए किया गया यह त्याग आपको लंबी अवधि की सफलता और सुख देगा।

आप अपने लक्ष्यों को पा सकेगे, उन चीजों और लोगों को खत्म करना होगा जो आपको एक नए स्तर तक ले जाने से रोक रहे हैं। बुरे आदतों का त्याग नहीं करते तो आपको मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा, आपका जीवन दुःखो से भरा होगा यह आपको जीवन में कभी सफल नहीं होने देगा। ऐसे बुरे आदतों का आप समय रहते छोड़ दे, यही आपके लिए अच्छा है।

सफलता पाने में त्याग का महत्व भी कम नहीं है। सफलता एक प्राप्ति है, एक उपलब्धि है, जिसे समाज में, समाज की सहायता से ही पा सकना संभव है। नियम है कि जो देता है, वही पाता है। यदि कोई यह चाहे कि वह संसार में पाता तो सब कुछ जाए, परन्तु उसे देना कुछ न पड़े, तो यह असंभव है।

ऐसा स्वार्थी और संकीर्ण मनोभाव के व्यक्ति का इस आदान-प्रदान से चलने वाले संसार में एक कदम भी आगे बढ़ पाना संभव नहीं है। इस प्रकार सफलता पाने या उसकी संभावना सुनिश्चित कराने के लिए जरूरी है कि किसी भी आवश्यक त्याग के लिए सदा तैयार रहा जाए।

तन में पहने कपड़े, सोना, चाँदी सब कुछ यहीं आकर मिला है। शरीर माता पिता से मिला है। विचार कीजिए कि हमारा है क्या ? जिसे आप अपना कहते हैं वह सारी वस्तुएँ हमारे उपयोग के लिए हैं। साथ ले जाने के लिए नहीं, किन्तु उनके प्रति हम इतना मोहित हो जाते हैं कि अपनी समझने लगते हैं। समझना और होना दोनों में बहुत अंतर है। हम उन्हें अपना समझते हैं, वे हमारी होती नहीं है।

यदि संसार की वस्तु मनुष्य के मृत्यु के बाद में ले जाने की व्यवस्था होती तो आज आपके लिए एक इंच भूमि भी नहीं बचती। मनुष्य मोह पाश में डूबकर जानबूझ कर अँधा बना है। भिखारी भी अपने भाग्य का ले जाता है। साधु-संतों का आहार भी हो जाता है। परिवार वाले तो अधिकार से खाते हैं। अतः आप कमाने के लिए कारण मात्र हो। कहा भी गया है दाने दाने पे लिखा है, खाने वाले का नाम।

त्याग के बिना कोई भी धर्म जीवित नहीं रह सकता। धर्म तथा आत्मा को जीवित रखने के लिए त्याग नितांत जरूरी है। समस्त जड़ वस्तु का त्याग करने वाला ही मुक्ति को प्राप्त कर पाता है। उन्होंने कहा कि ममत्व की शिलाओं को हटाने से ही शांति का झरना फूटता है। इसलिए हमें वस्तुओं का संग्रह करने के अपेक्षा अपना ध्यान धर्म और दान में लगाना चाहिए। यही पर किया गया दान-धर्म हमें मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जाएगा।

विद्यालय के पाठ्यपुस्तक में शामिल मूल्य 'त्याग' –

शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है। यही कारण है कि पाठ्यक्रम में ऐसे विषय-वस्तु शामिल किये जाते हैं जो छात्रों के चतुर्दिक विकास में सहायक हो। प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तरीय पाठ्यपुस्तकों के पाठों में ऐसे पाठ शामिल किये गए हैं जिनके माध्यम से छात्रों के सम्यक विकास के लक्ष्य प्राप्त किये जा सकें। सम्यक विकास में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं अध्यात्मिक विकास शामिल होते हैं।

अपने पाठ्यपुस्तकों के कुछ पाठों में मूल्य 'त्याग' के भाव दिखलाई देते हैं –

जैसे -

- **महान व्यक्तित्व – कक्षा – 6 'महर्षि दधीचि'**

इस पाठ में जब इंद्र ने महर्षि दधीचि से कहा कि – हे महर्षि “ब्रम्हा जी ने बताया है कि आपकी अस्थियों से अस्त्र बनाया जाए तो वह वज्र के समान होगा। वृतासुर को मारने हेतु ऐसे ही वज्रास्त्र की आवश्यकता है।” इंद्र की बात सुनते ही महर्षि का चेहरा कांतिमय हो उठा। उन्होंने सोचा, मैं धन्य हो गया। उनका रोम-रोम पुलकित हो गया। प्रसन्नतापूर्वक महर्षि बोले – “देवराज आपकी इच्छा अवश्य पूरी होगी। मेरे लिए इससे ज्यादा गौरव की बात और क्या होगी? आप निश्चय ही मेरी अस्थियों से वज्र बनवाएं और असुरों का विनाश कर चारों ओर शांति स्थापित करें।”

- **संस्कृत पियुषम् – कक्षा – 7 'अतिलोभो न कर्तव्यः'**

मायादास नाम का एक राजा था। मुनि की सेवा करके लालची मायादास को यह वरदान प्राप्त हुआ कि वह जिस वस्तु को स्पर्श करेगा वह सोने का हो जाएगा। इस प्रकार लालची मायादास ने महल की वस्तुओं को स्पर्श कर सोने का बना लिया। अंत में वह प्यास से व्याकुल होकर जैसे ही जल से भरे पात्र को स्पर्श किया, वह सोने का हो गया इसी प्रकार वह अपनी पुत्री को प्यार से गोद में उठाना चाहा और वह भी सोने की हो

गयी | इस प्रकार वह खाने-पीने की जिस वस्तु को छूता वह सोने की हो जाती | अंत में मायादास को यह एहसास हो गया कि लालच का परिणाम बुरा होता है |

त्याग जैसे मूल्य में परिवार, समाज और विद्यालय की भूमिका -

त्याग की भावना अत्यंत पवित्र है, त्याग करने वालों से ही संसार को प्रकाश व ऊर्जा मिलती रहती है | इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि त्याग के महत्व को परिवार, समाज एवं विद्यालय के माध्यम से एक बच्चे के अन्दर पूर्ण रूप से जागृत किया जाए क्योंकि एक बच्चे पर उसके पारिवारिक संस्कारों का स्थाई प्रभाव पड़ता है | आज परिवार में इस बात की आवश्यकता है की बच्चों को ऐसे कहानी या घटना को सुनाया जाय जिसमें - पिता के आज्ञा के कारण अयोध्या जैसे राज-पाठ को बिना क्षणभर गवाए प्रभु श्रीराम ने त्याग दिया | भाई के प्रेम में भरत जी ने अयोध्या की राजगद्दी को ठोकर मार दिया | पति द्वारा दिए गए वचन को निभाने के लिए माता सीता ने सारे राज सुख का त्याग कर दिया | महर्षि दधीचि ने देवताओं के विजय के लिए शरीर का त्याग कर दिया | महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति हेतु अपने राज-पाठ का त्याग कर दिया | महारणा प्रताप जैसे त्यागी पुरुष, स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए, अनगिनत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अपने देश प्रेम के कारण अपने प्राणों को त्याग दिया | वर्तमान समय में भी लाखों-लाख वीर सैनिक देश प्रेम के कारण अपने प्राणों का त्याग देने के लिए सर्वदा तैयार रहते हैं |

ऐसे त्यागी महापुरुषों के जीवन से परिचित कराकर परिवार, समाज एवं विद्यालय बच्चों में त्याग की भावना का विकास कर सकते हैं क्योंकि त्याग की भावना बच्चे में निःस्वार्थ कार्य करने को प्रेरित करती है |

सूक्तियां

- 'वेद का रहस्य सत्य है. सत्य का रहस्य इन्द्रियसंयम है. इन्द्रियसंयम का रहस्य त्याग है जो शिष्ट मनुष्यों के आचार में सदा विद्यमान रहता है।'

-वेदव्यास

- संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है ।

-प्रेमचंद

- त्याग के अतिरिक्त और कहां वास्तविक आनन्द मिल सकता है, त्याग के बिना न ईश्वर प्रेरणा हो पाती है, न प्रार्थना । – रामतीर्थ
- त्याग और उपलब्धि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।

-सुभाषचन्द्र बोस

- मान को त्याग देने पर मनुष्य प्रिय होता है, क्रोध को त्याग कर शोक नहीं करता, काम को त्याग कर वह अर्थवान् होता है , लोभ को त्याग कर सुखी होता है ।

- वेदव्यास

- उपार्जित धन का सत्पात्र में त्याग ही उसकी रक्षा है जैसे जलाशय में स्थित जलों का बहाव उनकी रक्षा करता है ।

-चाणक्यनीति

- जीवन में यहां मनुष्यों के लिए त्याग से बढ़ कर कुछ नहीं है ।

-जातक

- जो मनुष्य त्याग करता है और दुःख मानता है, उसने त्याग किया ही नहीं है, सच्चा त्याग सुखद होता है, मनुष्य को ऊँचा ले जाता है ।

-महात्मा गांधी

- तालाब के जल को स्वच्छ रखने के लिए उसका बहते रहना आवश्यक है. इसी प्रकार अर्जित धन का त्याग करते रहना ही उसकी रक्षा है ।

-चाणक्य

डॉ. कुँवर भगत सिंह

एस.आर.जी., वाराणसी